



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार

पत्र का नाम

दीन १, माह १२

दिनांक

४.१२.२२

पृष्ठ संख्या

३

कॉलम

५७

कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भुत समागम है संग्रहालय: आहुजा

कृषि मंत्रालय के सचिव ने एकिक व संग्रहालय के बारे में ली जानकारी

मासिक न्यूज़ लिस्ट

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव मनोज अहुजा ने कुलपति प्रो. बीआर कान्वोज को अमुखी में विश्वविद्यालय के संग्रहालय व एकिक दोरा का दैरा किया। इस दैरान सचिव अहुजा ने जानकारी कि विश्वविद्यालय का यह संग्रहालय कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भुत समागम है। उन्होंने कहा कि संग्रहालय में गैरवमयी संस्कृति व ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी भी मिलती है। इस संग्रहालय में अग्रंथों की एक ही छत के नीचे विश्वविद्यालय की विशिष्ट उपस्थितियों, कृषि व कृषक हितों की कलाएं के साथ-साथ हरियाणा की गैरवमयी संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी फिल रही है। वर्तमान व भावी पीढ़ी भी इस संग्रहालय का भ्रमण करके कृषि व कृषि की किसान यात्रा के बारे में ज्ञान हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि संग्रहालय के प्रारम्भ में ही हरियाणा की गैरवपूर्ण किसान यात्रा के सामाजिक, राजनीतिक, अर्थीक, जनसाधिकों के आंकड़ों को दर्शाएं जाने के साथ अग्रंथों को दर्शाएं जाने के लिए एक विशेषकर स्कूली बच्चों को



कृषि के बारे में जागरूक करने के

एकिक का भी किया दैरा

सचिव मनोज अहुजा ने एकिक में दैरा करने के बाद बताया कि एकिक युवाओं व किसानों को उनके उत्पाद की प्रोटोसिंग, मूल्य संवर्धन, ऐसिंग, सर्विसिंग व बहिर्भूत जैसे महत्वपूर्ण कारबों के लिए भी मार्गदर्शन करता है जिससे किसान अपने व्यवसाय को अच्छे से स्थापित कर सकते हैं। एकिक किसान को खुद का व्यवसाय खड़ा करने के लिए कंपनी बनाने, लाइसेंस लेने, उनके न्याचार को पेट्रोट प्रदान करने व उत्पाद को मार्केट में बेचने व सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस अवसर पर ओप्सली भी अमृत ढींगा, विस्तार शिक्षा निदेशक द्वारा बनवाने रिह, मीडिया एडवडजर द्वारा संदीप अर्थ उपस्थित थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दौरा भूमि	८.१२.२२	१	३-७

केंद्रीय सचिव ने एविक व कृषि विज्ञान संग्रहालय की ली जानकारी

कृषि के इतिहास व भविष्य का समागम संग्रहालय

हरियाणा न्यूज़ | हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव मनोज आहुजा ने कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज की अगुवाई में विश्वविद्यालय के संग्रहालय व एविक सेटर का दौरा किया। इस दौरान सचिव आहुजा ने बताया कि विश्वविद्यालय का यह संग्रहालय कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भुत समागम है। उन्होंने कहा संग्रहालय में गौरवमयी संस्कृति व ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी भी



हिसार। एविक व संग्रहालय का दौरा करते सचिव मनोज आहुजा व अन्य।

एविक का भी किया दौरा

सचिव मनोज आहुजा वे एविक ने दौरा करने के बाबत बताया कि एविक युद्धाओं व तिन्हाँ की उनके उत्पाद जी प्रोटोसिङ, मूर्च उत्तर्धन, पैकेजिंग, सर्विलिंग व बाइंग जैसे नहात्पूर्ण कार्यों के लिए जी नालंदशन करता है। जिससे तिन्हाँ आज्ञे व्यवसाय को अच्छे से स्थापित कर सकते हैं। एविक किसान को खुद का व्यवसाय बढ़ा करने के लिए कृपाली बगान, लाहसौरा लैका उनके व्यवसाय को पेटेट प्रबला तरने व उत्पाद को जारी करने से जहात्पूर्ण देखें में जहात्पूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस अवसर पर ऑपरेटरों डॉ. गतुल दीवाल, विस्तर शिल्प निदेशक डॉ. अरविंद शिंह, मॉडिया एडवाक्याल डॉ. उद्दीप आदि गौजूहों द्वारा आवाज़ दी गई है।

हुए एक ग्रामीण पुरातन संग्रहालय जैसे रसाई का सामान, बर्तन, बख्त, स्थापित किया गया है। कृषि में चरखा, बैलगाड़ी आदि को ग्रामीण उपयोग किए जाने वाले पुरातन वंशों से एकत्रित करके खुबसूरत तरीके से प्रदर्शित किया गया है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब कृषि	४.१२.२२	३	१-३

कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भूत समागम है संग्रहालय : मनोज आहुजा

कृषि मंत्रालय के सचिव ने एविक व कृषि विज्ञान संग्रहालय के बारे में ली जानकारी



हिसार, ७ दिसम्बर (ब्लूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव मनोज आहुजा ने कुलपति प्रो. बी.आर. काम्योज की अगुवाई में विश्वविद्यालय के संग्रहालय व एविक सेंटर का दैरा किया। इस दैरान सचिव आहुजा ने

एविक व संग्रहालय का दैरा करते सचिव मनोज आहुजा व अन्य अधिकारीगण।

बताया कि विश्वविद्यालय का यह आंकड़ों को दर्शाए जाने के साथ आगंतुकों, विशेषकर स्कूली बच्चों को कृषि के बारे में जागरूक करने के संग्रहालय में गैरवमयी संस्कृति व ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी भी मिलती है।

इस संग्रहालय में आगंतुकों को एक ही छत के नीचे विश्वविद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियों, कृषि व कृषक हितों कार्यों के साथ-साथ, हरियाणा की गैरवमयी संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी भी इस संग्रहालय का भ्रमण करके कृषि व कृषि की विकास यात्रा के बारे में ज्ञान हासिल कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि संग्रहालय के प्रारम्भ में ही हरियाणा की गैरवपूर्ण विकास यात्रा के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, जनसांख्यिकीय

आंकड़ों को दर्शाए जाने के साथ आगंतुकों, विशेषकर स्कूली बच्चों को कृषि के बारे में जागरूक करने के लिए कृषि विकास यात्रा को त्री-आयामी भित्ती-वित्ती द्वारा दर्शाया गया है, जिनकी विस्तृत व्याख्या के लिए टच-स्क्रीन कियोस्क लगाए गए हैं। सचिव आहुजा ने एविक में दैरा करने के बाद बताया कि एविक युवाओं व किसानों को उनके उत्पाद की प्रोसेसिंग, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग, सर्विसिंग व ब्रॉडबैंड जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी मार्गदर्शन करता है, जिससे किसाने अपने व्यवसाय को अच्छे से स्थापित कर सकते हैं।

इस अवसर पर ओ.एस.डी. डॉ. अतुल ढोंगड़ा, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक निवृत्ति	४ - १२ - २२	५	७-८

'कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भुत समागम है संग्रहालय'



हिसार में कृषिकार को एविक सेंटर व संग्रहालय का दौरा करते उचित मनोज आहुजा व अन्य अधिकारी। ज्ञा

हिसार / दिसंबर (निस)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव मनोज आहुजा ने कुलपति प्रो. बीआर काम्योज की अग्रवाइ में विश्वविद्यालय के संग्रहालय व एविक सेंटर का दौरा किया। इस दौरान सचिव आहुजा ने बताया कि विश्वविद्यालय का यह संग्रहालय कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भुत समागम है। उन्होंने कहा संग्रहालय में गौरवमयी संस्कृति व ऐतिहासिक घोरहरों की जानकारी भी मिलती है।

विश्वविद्यालय के विभिन्न महाविद्यालयों, विभागों, संकायों की जानकारी देने के लिए श्री-डी मॉडल लगाए गए हैं जो विश्वविद्यालय का अति सुन्दर चित्रण प्रस्तुत करते हैं। हरियाणवी

संस्कृति को दर्शाते हुए एक ग्रामीण पुरातन संग्रहालय स्थापित किया गया है, जिसमें कृषि में उपयोग किए जाने वाले पुरातन यंत्रों, ग्रामीण दिनचर्यों की विभिन्न वस्तुओं जैसे रसाई का सामान, बत्तन, वस्त्र, चरखा, बैलगाड़ी आदि को ग्रामीण क्षेत्रों से एकत्रित करके खूबसूरत तरीके से प्रदर्शित किया गया है।

सचिव मनोज आहुजा ने एविक में दौरा करने के बाद बताया कि एविक युवाओं व किसानों को उनके उत्पाद की प्रोसेसिंग, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग, सर्विसिंग व ब्रॉडबैंड जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी मार्गदर्शन करता है, जिससे किसाने अपने व्यवसाय को अच्छे से स्थापित कर सकते हैं। इस अवसर पर ओपसडी डॉ. अतुल दीगढ़ा, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ बलदान सिंह, मीडिया एडवाइजर डॉ संदीप आर्य व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीट समाचार	४.१२.२२	५	३-६

कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भुत समागम है संग्रहालय : मनोज आहुजा कृषि मंत्रालय के सचिव ने एविक व कृषि विज्ञान संग्रहालय के बारे में ली जानकारी

हिसार, ७ दिसंबर (विंदेंद वर्मा)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव श्री मनोज आहुजा ने कुलपति प्रो. श्री.आर. काम्बोज की अगुवाई में विश्वविद्यालय के संग्रहालय व एविक सेंटर का दौरा किया। इस दौरान सचिव आहुजा ने बताया कि विश्वविद्यालय का यह संग्रहालय कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भुत समागम है। उन्होंने कहा संग्रहालय में गौरवमयी संस्कृति व ऐतिहासिक घरोंहरों की जानकारी भी मिलती है। इस संग्रहालय में आगांतुकों को एक ही छत के नीचे विश्वविद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियों, कृषि व कृषक हितों की कार्यों के साथ-साथ हरियाणा की गौरवमयी संस्कृति एवं ऐतिहासिक घरोंहरों की जानकारी मिल रही है। वर्तमान व भावी पीढ़ी भी इस संग्रहालय का भ्रमण करके कृषि व



एविक व संग्रहालय का दौरा करते हुए सचिव मनोज आहुजा व अन्य अधिकारीजन। कृषि की विकास यात्रा के बारे में ज्ञान कियोस्क लगाए गए हैं। विश्वविद्यालय हासिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि के विभिन्न महाविद्यालयों, संग्रहालय के प्रारम्भ में ही हरियाणा की गौरवपूर्ण विकास यात्रा के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, जनसाधिकारी आंकड़ों को दर्शाएं जाने के साथ आगांतुकों, विशेषकर स्कूली बच्चों को कृषि के बारे में जागरूक करने के लिए कृषि विकास यात्रा को शुद्ध चित्रण प्रस्तुत करते हैं। हरियाणावी संस्कृति को दर्शाते हुए एक ग्रामीण पुरातन संग्रहालय स्थापित किया गया है जिसमें कृषि में उपयोग किए जाने वाले पुरातन यंत्रों, ग्रामीण दिनवर्षा की विभिन्न बस्तुओं जैसे रसाई का सामान, बर्तन, बस्त्र,

चरखा, बैलगाड़ी आदि को ग्रामीण क्षेत्रों से एकत्रित करके खबरसूत तरीके से प्रदर्शित किया गया है।

एविक का भी किया दौरा : सचिव मनोज आहुजा ने एविक में दौरा करने के बाद बताया कि एविक युवाओं व किसानों को उनके व्यापाद की प्रेमेसिंग, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग, सर्विसिंग व ब्रॉडबंड जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए भी मार्गदर्शन करता है जिससे किसाने अपने व्यवसाय को अच्छे से स्थापित कर सकते हैं। एविक किसान को खुद का व्यवसाय खड़ा करने के लिए कंपनी बनाना, लाइसेंस लेना, उनके नवाचार को पेटेंट प्रदान करने व व्यापाद को मार्केट में बेचने में सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस अवसर पर आएशडी डॉ. अतुल दीगड़ा, विसार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह, मीडिया एडवाइजर डॉ. सौदीप आर्य व अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त दीर्घा।	07.12.2022	-----	-----

कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भूत समागम है संग्राहलय व एविक सेंटर : आहुजा

समाज हरियाणा न्यूज़
हिमार। चौथी परण सिंह हरियाणा कृषि विभागीयता में कृषि एवं विकासन कल्याण वरोत्तमपे के सचिव औ भवीत झाहुआ ने बूद्धपति श्री, श्री, अस. कामोदेव की अग्रवाल में विभागीयता में कोशलतापे व एकीक संटर का दीया किया। इस दीयान मध्यिक औ झाहुआ ने विकासन के विभागीयता का यह अंतर्राज्यालय वृष्टि के लक्षणात्म और विकास का अद्भुत समापन है। उन्होंने कहा संप्रदायता में गौरवमयी संस्कृति व ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी भी विलक्षि है। इस अंतर्राज्यालय में आगामीकों को एक ही उत्त के नीचे विभागीयता की विजिष्ठ उत्पलब्धियों, कृषि व कृषक इतिहास कार्यों के साथ-साथ हरियाणा की गौरवमयी संस्कृति एवं ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी मिल रही है। वर्तमान व भावी गोदी भी इस संप्रदायता का भ्रमण करके कृषि व कृषक की विकास योग के बारे में ज्ञान हासिल कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि संप्रदायता के प्रारम्भ में ही हरियाणा की गौरवपूर्ण विकास योग के सामाजिक, राजनीतिक, अर्थव्यवस्थाओं और भौकंडों को दर्शाएं जाने के साथ जागरूकों, विदेशीकर न्यूज़ीलैंड वर्षों को कृषि के बारे में जागरूक करने के लिए



कृपि विकास गाह को जी-अध्यामी प्रिती-चिंता
द्वारा दर्शाया गया है जिसमें व्यवस्था के लिए
टच-स्क्रीन कियोरल साधारण गया है। विश्वविद्यालय
के विभिन्न महाविद्यालयों, लिपिग्राह-संकायों का
आनंदकारी देने के लिए जी-अध्यामी (जी-
टी) मॉडिल लाना चाही गया है जो विश्वविद्यालय का अति
मुन्द्र विकल प्रस्तुत करते हैं। हरियाणवी संस्कृति
को दर्शाते हुए एक ग्रामीण पुरालौ संग्रहालय
स्थापित किया गया है जिसमें कृपि में उपयोग किए
जाने वाले पुस्तक बंडों, ग्रामीण दिवानबां की विभिन्न
वस्तुओं जैसे रसाई का सामान, बरन, बस्त, बरता,
बैलगांडी आदि को ग्रामीण लोगों से एकत्रित करके
ग्रहणमुक्त लकड़ियों से प्रतीरूप किया गया है। विभिन्न
श्री मनोज आहुजा ने एकल में दीरा करने के बाद
बताया कि एकल वृषभों व किसानों को उनके
ज्ञानपद में प्राप्तेयों, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग,
सर्विसिंग व ब्राइंडिंग जैसे महत्वपूर्ण कार्यों के लिए
भी माहार्टिन करता है जिससे किसानों आपने
व्यवसाय को अचैते से स्थापित कर सकते हैं।
एकल किसान को मुद्र का व्यवसाय खड़ा करने के
लिए कंपनी बनाया, लाइसेंस लेना, उनके व्यवसाय
को बैट्टे प्रदान करने व उपाद को बैकेट में बनने
में महायोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
इस अवसर पर औरंगाबाद जी-अधूत लीमड़ा,
विश्वार विश्वा निदेशक डॉ. बलमान रिंड, पौरीया
एडवाइजर जी. संदीप आर्य व अन्य अधिकारीय
उपस्थित हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्बन्धी पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
संग्रह पत्र	07.12.2022	-----	-----

कृषि मंत्रालय के सचिव ने एविक व कृषि विज्ञान संग्रहालय के बारे में ली जानकारी

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के सचिव मनोज आहुजा ने कुलपति प्रो. बी.आर. कामोज की अगुवाई में विश्वविद्यालय के संग्रहालय व एविक सेंटर का दैरा किया।

इस दैरान आहुजा ने बताया कि यह संग्रहालय कृषि के इतिहास और भविष्य का अद्भूत समागम है। उन्होंने कहा संग्रहालय में गौरवमयी संस्कृति व ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी भी मिलती है। इस संग्रहालय में आगंतुकों को एक ही छत के नीचे विश्वविद्यालय की विशिष्ट उपलब्धियों, कृषि व कृषक हितेषी कार्यों के साथ-साथ हरियाणा की गौरवमयी संस्कृति एवं



एविक व संग्रहालय का दैरा करते सचिव श्री मनोज आहुजा व अन्य अधिकारीगण।

ऐतिहासिक धरोहरों की जानकारी मिल रही है।

आहुजा ने एविक में दैरा करने के बाद बताया कि एविक युवाओं व किसानों को उनके उत्पाद की प्रोसेसिंग, मूल्य संवर्धन, पैकेजिंग, सर्विसिंग व ब्रांडिंग जैसे महत्वपूर्ण

कार्यों के लिए भी मार्गदर्शन करता है जिससे किसाने अपने व्यवसाय को अच्छे से स्थापित कर सकते हैं। एविक किसान को खुद का व्यवसाय खड़ा करने के लिए कंपनी बनाना, लाइसेंस लेना, उनके नवाचार को पेटेट प्रदान करने व उत्पाद के

मार्केट में बेचने में सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस अवसर पर ओएसडी डॉ. अतुल ढाँगड़ा, विस्तर शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान रिंह, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य व अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम
दैनिक भास्तु

दिनांक
7-12-22

पृष्ठ संख्या
५

कॉलम
१-५

रिसर्च • एचएयू के वैज्ञानिकों ने हरियाणा और राजस्थान के 200 हिरणों पर उनके खानपान और व्यवहार को लेकर की रिसर्च पहली बार औषधीय पौधे आक का सेवन करते मिले काले हिरण, बढ़ाते हैं खुद की रोग प्रतिरोधक क्षमता | चिड़ियाघरों में रहने वाले हिरणों के चारे में आक मिलाने की सलाह दी ताकि पशुओं की इम्युनिटी बढ़ाई जा सके

महसूस अमीरी | लिखा

जिस तरह से मुख्य घरों में रहकर परिवार की रक्षा करते हैं। उसी तरह काले हिरण भी अपने इलाकों में रहते हैं। वे अपने इलाके की रक्षा करते हैं। खासकर प्रजनन के मौसम के दौरान। इस दौरान, व्यक्त नर हिरण नियमित रूप से विशेष स्थानों पर मल या भूत्र से नियमन लागकर एक क्षेत्र स्थापित करता है। नर इस समय के दौरान बेहद अक्षमक होते हैं और अन्य सभी नर हिरणों को अपने क्षेत्र से गले की विशेष चुराहट और सीधों की लड़ाई से भगते हैं। यही नहीं काला हिरण औषधीय पौधे आक का भी सेवन कर खुद की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है। आक के पौधे को कोई भी पर्यावरणी स्थानों पर नहीं खड़ा किया जाता। एचएयू वैज्ञानिकों

नथ्य समझे आए हैं। एचएयू ने चिड़ियाघरों या फिर अन्य स्थानों पर भी ऐसे हिरणों को चारे में आक मिलाकर सेवन कराने की सलाह दी है, ताकि हिरणों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाया जा सके। एचएयू के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न गव्हर्नर और काम्बोज पर्यावरण और जैव विविधता को सेवन करने के लिए विशेष लागत लागत है। उन्होंने विवर का काल्पनिक समालौत ही विभिन्न प्रकार की फसलों और फलों की नई-नई किसिमें खोजने के मुख्य काम के अलावा वैज्ञानिकों को निर्देश दिए थे कि वे देश और हरियाणा प्रदेश की जैव विविधता (बायोडायार्मिटी) को संरक्षित करने की दिशा में भी शोध करें, जिसके परिणाम अब अनेक रुप हो गए हैं। हरियाणा के गज्जर जाती काले विशेष रूप से अधिक

हरियाणा और राजस्थान के हिरणों में मिली समानता

एचएयू के वैज्ञानिकों ने हरियाणा के हिसार के मालानी सुरतिया, बड़ोइसल और राजस्थान के चुहाली के तलां छाप में 200 हिरणों पर शोध कर्य करने पर पाया कि हिरण सुख और शाम ज्यादा चारा खाते हैं, दोषकर में अराम करते हैं। हिरण भोजन की अधिकता खाने स्थानों पर 20 से 30 माला हिरणियों के रोकनकर रखते हैं और इस क्षुण्ड की रक्षा भी जाती है। ब्रांडिग सोजन के दौरान यह बलता रहता है। रिसर्च के दौरान बड़ोइसल एवं मालानी सुरतिया और तहलाकप मैक्स्युअली में काले हिरण की प्रजातियों के बीच समानता पाई गई। वैज्ञानिकों ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के लिए डीएनए बास-कोडिंग के माध्यम से विभिन्न अधिकारी के कुल 20 नमूनों की जांच की गई और मालानी-बड़ोइसल महाटोडोइसल संस्कृती दोनों की काले हिरणों की प्रजातियां समान हैं।

ये बोले वैज्ञानिक: आक खासकर सर्दी के भौमिक में हिरणों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है क्योंकि आक औषधीय गुणों से भरपूर होता है। इसलिए सर्दी में हिसार के डिप्पर पर्यावरणी

कृष्ण 1 जीन के अधिक प्रवर्धन का उपयोग करके इंटर्न और इन्व्रिंजिट अन्तर्राष्ट्रीय विविधता का खुलासा किया। बेलूर पर्यावरण के लिए मृत और ऊरकों के नमूनों की जांचा गया। नमूनों से डीएनए की अच्छी युग्मता निकाली गई और 50 डिग्री सेलिसियल के तापमान पर प्रवर्धित किया गया। हरियाणा और राजस्थान के काले हिरणों के नमूनों के परिणामों की अपास में तुक्का एवं व्यापारीकी वृक्ष की रक्का के लिए, राष्ट्रीय जैव प्रोटोपिकी सूचना केंद्र, अमेरिका के डेटाबेस का प्रयोग एवं मिलान करने पर पाया गया कि हरियाणा और राजस्थान के हिरणों के नमूनों में क्रमशः 99.52% और 99.35% समान पहचान का अस्तित्व पाया गया। यानी दोनों प्रदेशों की काले हिरणों की प्रजातियां समान हैं।

हिरणों के व्यवहार का अध्ययन

वीसी के निर्देश पर एचएयू के प्राणी विज्ञान विभाग के शोधार्थी विक्रम सिंह डेल ने वैज्ञानिक डॉ. धर्मवीर मालिक के निर्देशन में पहली बार काले हिरण की लूप्राय प्रजाति (बैनकल्क एटीलोप सर्विकाप्रा प्लन.) की चर्यनित आबादी के बीच व्यवहारिक पैटर्न, प्रकृतिक अवधार में खाने की कमी के दौरान हिरणों का व्यवहार और हरियाणा और राजस्थान के विभिन्न काले हिरणों की आबादी के बीच आनुवांशिक संबंधों का अध्ययन किया। इसमें चौकाने वाले तथ्य पहली बार सामने आए। डॉ. धर्मवीर मालिक और विक्रम डेल द्वारा संयुक्त रूप से लिखा गया शोध पत्र अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका 'हाइड्रेन परिस्टर' के अंकवर, 2022 के बॉल्टम 148 (10) में प्रकाशित हुआ है। शोध में पता चला कि बैनकल्क (काले हिरण) आक (फैलोट्रोपिस प्रोसेग) के पत्तों को भोजन की कमी के दौरान खाते हैं। हिरणों द्वारा आक के पत्तों को खाने का रिकॉर्ड मिला है। हरियाणा का ये राजकीय पशु भोजन की कमी की स्थिति में कैलोनेट्रोपिम



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२११२ भाष्टु	४.१२.२२	५	१-६

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक की प्रदेश के किसानों को सलाह दिसंबर में मूली, शलगम, गाजर और गेहूं की उन्नत किस्मों की बिजाई कर लें अच्छा उत्पादन

भास्कर न्यूज़ | हिसार/गढ़ौर

दिसंबर माह में गेहूं, और मटर की उन्नत किस्मों की बुवाई कर किसान अच्छी आमदनी कमा सकते हैं। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार (एचप्य) के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज का कहना है कि दिसंबर माह में गेहूं- मूली, शलगम व गाजर की उन्नत किस्मों की बुवाई की जा सकती है। इसके अलावा गता, बरसीम, पालक की खेती की देखभाल भी बहुत जरूरी होती है। थोड़ी सी सावधानी बरतकर किसान अधिक आमदनी कमा सकता है।

पालक की फसल में नियमित सिंचाई की आवश्यकता होगी और खड़ी फसल में दो बार नड्डोजन खाद देनी चाहिए। पहली बार बिजाई के 4 सप्ताह बाद व फिर इसके 4 सप्ताह बाद दोबार ढाले। वहीं, किसानों को खाद देने के बाद सिंचाई करनी चाहिए।

जानिए... दिसंबर माह में किस फसल के लिए क्या करें...

गेहूं: दिसंबर में गेहूं की पछेती बिजाई कर सकते हैं। इसके लिए डब्ल्यूएच 1124, गज 3765, डब्ल्यूएच 1021, व डीकोट्ट्व्यू 90, एचडी 3059, एचडी-2851, एचडी-3117, 3167, 3018, 2864 ही बोएं। प्रति एकड़ 60 किलो बीज ढालें।

बरसीम व ल्यूसर्न : बरसीम व ल्यूसर्न की फसल को हरे चारे के लिए कटाई करने के बाद पानी लगाएं। सर्दियों में 20-25 दिन के अंतर पर फसल को पानी देते रहें। अधिक मर्दी पहुँचे पर यूरिया ढालने से बढ़वार ठीक मिल जाएंगे।

गता : गते की समय-समय में पकने वाली किस्मों की कटाई करके गुड़ बनाएं। देर से पकने वाली किस्मों को पाले से बचाने के लिए फसल में समय-समय पर पानी लगाते रहें। लाल सड़न रोग से प्रभावित खेतों से गते की कटाई कर लें।

मूली, शलगम व गाजर : जड़ वाली फसलों की समय पर बिजाई करें। खुली हुई जड़ों पर मिट्टी चढ़ाएं। फसल पर यदि सांडी का आक्रमण हो तो 250-400 मि.ली. मैलाश्वयन को 250-400 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़कें।

मटर : मटर बिजाई के 4-6 सप्ताह बाद यूरिया खाद देकर सिंचाई करें। पछेती फसल में निर्दृष्ट करें, खरपतवार निकालें। फसल की हानिकारक कीटों से रक्षा करें। इसके लिए प्रति एकड़ 60 मि.ली. साइपरमेथिन को 200-250 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।